ईश्वर एक पर देवी-देवता अनेक

-ब्र.कु. गंगाधर

भगवान, ईश्वर, परमात्मा नाम अनेक है लेकिन शक्ति एक है और यही शक्ति दुनिया का संचालन कर रही है। उस निराकार की भक्ति करने के लिए भक्त मन में भगवान को किसी भी प्रिय रूप में देखता है। ऋग्वेद के अनुसार 'एक सत बहुधा विप्रा वदन्ति' अर्थात् एक ही परम सत्य को विद्वान कई नामों से बुलाते हैं। गीता, वेद, उपनिषद आदि के मुताबिक सभी देवी-देवता एक ही परमेश्वर के रूप हैं, जिनकी हम अलग-अलग नामों से पूजा-अर्चना करते हैं। योग, न्याय, शैव और वैष्णव मतों के अनुसार, देवी-देवता वे पारलौकिक शक्तियां हैं, जो ईश्वर के अधीन हैं और मानव मन पर शासन करती है, लेकिन मींमासा के अनुसार, सभी देवी-देवता स्वतंत्र सत्ता रखते हैं और उनके ऊपर कोई ईश्वरीय सत्ता नहीं। इच्छित कर्म करने के लिए इनमें से एक या कई देवी-देवताओं को पूजा और कर्मकांड के जरिए प्रसन्न करना जरूरी है।

यह सिर्फ हिन्दू धर्म की बात नहीं है। दुनिया के कई देशों में देवी-देवताओं की कल्पना की गई है और उन्हें विशिष्ट गुणों से विभूषित किया गया। जैसे कि मिस्र में एमन, रा, ओसिरिस, आइसिस, तथा अन्य देवी-देवताओं को प्राकृतिक और मानवीय शक्तियों के समन्वित चिन्हों से पूजा जाता था। पशु-पक्षी भी इससे अछूते नहीं रहे थे। यूनान में संगीत के देवता अपोलो, मिडास का अद्भुत व्यक्तित्व ऐसा था, जिसके स्पर्श से ही चीजें सोना बन जाती। और तो और, सौंदर्य की देवी वीनस और शक्ति के देवता हरक्युलिस को भी पूजा जाता था। अन्य देशों में भी ऐसे ही देवी-देवताओं की कल्पना की गई, लेकिन कई बार मन में ख्याल आता है कि जब ईश्वर एक है तो अलग-अलग देवी-देवता क्यों? शास्त्रों के अनुसार, देवी-देवताओं की संख्या 33 करोड़ बताई गई है। वैदिक काल के ऋषि बहुत विद्वान थे, इसीलिए उन्होंने विभिन्न देवी-देवताओं के रूप में परमेश्वर की अलग-अलग शक्ति धाराओं के गुण का बखान किया है। देव संस्कृति की यहां विचार स्वातंग्य को भी प्रधानता मिली। यहां नास्तिक उतनी ही वैचारिक स्वतंत्रता के साथ रहते हैं, जितने की आस्तिक। जैनों का शून्यवाद और चावार्क भी उतना ही सम्मान पाते हैं। जितना द्वैतवाद और अद्वैतवाद। ईश्वर के स्वरूप और कल्पना के लिए पूरी छूट दी गई है और माना गया है कि आखिरकार, व्यक्ति नीतिमत्ता और परम सत्ता के अनुशासन को मानते हुए ईश्वरीय तत्व को जीवन में उतारेगा। चाहे वह किसी का भी नाम लेगा, होगा तो ईश्वर पारायण ही।

एक बार अकबर ने सभा में बीरबल से एक सवाल पूछा कि अगर ईश्वर एक है तो इतने दैवी-देवताओं का क्या अर्थ है? बीरबल ने दीवान-ए-खास के पास खड़े संतरी को बुलाया और उसकी पगड़ी की तरफ इशारा करते हुए पूछा, वह क्या है? अकबर ने हंसते हुए जवाब दिया पगड़ी। बीरबल ने संतरी से पगड़ी खोलने के लिए कहा संतरी ने हिचकते हुए पगड़ी खोल दी। बीरबल ने उसे कमर में बांधने को कहा, संतरी ने वैसा ही किया। फिर बीरबल ने अकबर से पूछा, अब ये क्या है? अकबर बोले, कमरबंद। अब फिर से बीरबल ने संतरी को पगड़ी अपने कंधे पर रखने के लिए कहा और अकबर से पूछा, अब यह क्या है? अकबर ने कहा, आप ही बताएं कि यह क्या है? बीरबल ने कहा, कपड़ा। इस उदाहरण से अकबर को बाहरी भिन्नता और आंतरिक समरूपता की बात समझ आ गई। ईश्वर जब सृष्टि की रचना करता है तो वह ब्रह्मा को रचता है। सृष्टि के पालनहार के रूप में विष्णु है, और जब पुरानी दुनिया के विनाश कराता है तो वह प्रलयकारी शंकर रचता है। इसका मतलब यह है कि तीनों कर्तव्य रचयिता है। कर्तव्य तीनों अलग-अलग है, बल्कि देव स्वरूप ईश्वर की शक्ति की भिन्न-भिन्न अभिव्यक्तियां हैं। इनमें से कई ईश्वर की उपासना स्त्री के रूप में करते हैं तो वह देवी कहलाता है। यही वजह है कि कोई उन्हें माँ के रूप में पूजता है। तो कोई परमपिता के रूप में। कहीं-कहीं सखा या प्रिय के रूप में जिसकी जैसी भावना वैसे ही रूप से पूजता, भक्ति करता है। कहा जाता है, जाकी रही भावना जैसी, प्रभु सूरत देखी तिन तैसी। यह सत्य है कि ईश्वर निराकार है, लेकिन उसकी आराधना जिस रूप में की गई है, उसी रूप में वह मूर्त भी हुआ है। यानी वे हमारी भावना के अनुरूप उस अरतम शक्ति रूपांतरित करता है। वह निराकार, स्वयंभू, शिव-निराकार।

आत्मअभिमानी बनने से ही भगवान के साथ का अनुभव कर सकते हैं

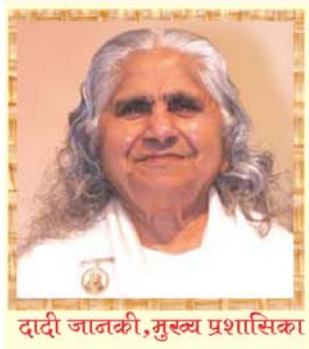

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

संगमयुग पर बाबा को दिल-तख्त नशीन बनने के लिए बुद्धि में और कुछ भी न हो। सिर्फ जिस बाबा को जीवन दी है वो मेरे जीवन का साथी हो। बाबा ने तो अपना बनाया लेकिन हमने भी जीवन दिया। मेरा पालनहार वही है, इससे नेचुरल ही हम निश्चिंत हो जाते हैं। कइयों को निश्चिंत रहना मुश्किल लगता है। जितना बाबा चाहता है क्या हम उतने बेफिक्र हैं? बेफिक्र रहने से खुशी होती है, खुश रहने से बेफिक्र रहते हैं। ऐसे नहीं - सेवा में सफलता हुई तो खुशी, कम सफलता हुई तो कम खुशी। एक तो अपने को सदा खुश रहने का आदती बनाना है। यदि सेवा से खुशी होती है तो सेवा को ही जीवन का आधार बना लेने से सदा खुश नहीं रह सकेंगे। अपने को सदा खुश रखने के लिए किसके बच्चे हैं, मुझे कैसा बनना है, सपूत बनकर सबूत दिखाना है, उसमें खुशी होगी। सपूत बनने से अंदर की खुशी होगी, बाबा की तरफ से प्रवाह मिलेगा औरों की तरफ से निमित्त बन जायेंगे। सपूत बनना माना श्रीमत पर चलना। श्रीमत पर चलते-चलते सपूत बनने के संस्कार बन जाते हैं। और कुछ आता ही नहीं। बाबा जो कहता है वह करना बड़ा अच्छा लगता है। लाइफ का आधार है आज्ञाकारी सपूत बनना। सदा हाँ जी करना ही आता है, ना जी करना नहीं आना चाहिए। ना करना सपूत की निशानी नहीं है। अंदर से धीरज और शांत चित्त रहने का स्वभाव बनाना पड़ता है तभी सपूत बन सकते हैं। बाबा का डायरेक्शन है देही अभिमानी भव। देही अभिमानी बने बिना बाबा के साथ का अनुभव नहीं हो सकता।

सदा हमारी वृत्ति ऊपर रहे तो यहां से नष्टोमोहा बनें। वृत्ति उपराम तब बनेगी जब हम आत्म अभिमानी बनेंगे। देह अभिमानी बुद्धि हमको उपराम होने नहीं देगी। बाबा इतना कार्य व्यवहार करते हुए भी सदा उपराम रहते। कोई कहते हैं मेरा किसी में भी मोह नहीं है, लेकिन सबूत क्या? देखा जाता है सब विकारों में सूक्ष्म मोह है। तब अंत में कहा है नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। लौकिक से तो मोह छूटा लेकिन अलौकिक में भी रिंचक मात्र भी मोह है तो स्मृतिलब्धा बनने नहीं देगा। इसके लिए गुप्त मेहनत करनी पड़ेगी। बुद्धि से गुप्त मेहनत क्या करेंगे? अपने को आत्मा समझकर देह अभिमान को छोड़ दें। अहंकार को, अभिमान को छोड़ भान से भी परे होते जाओ। अहंकार तो नहीं है, पर देह अभिमान है इसलिए मान-शान, दु:ख-सुख की फीलिंग आ जाती है। नाजुक नेचर बन जाती है। स्ट्रांग नेचर नहीं बनती जो सहन कर सकें, सामना कर सके, बाबा से मिली हुई शक्तियों को यूज कर सकें। नाजुक नेचर भी देह भान है। कोई बात सहन नहीं होती, देह अभिमान है। कभी कोई बात सुनकर घबराहट आ जाती है, देह भान है। इसका इलाज है, अंदर से अभिमान छोड़कर विदेही बनने का पुरुषार्थ करो। बाबा के साथ का अनुभव करो। बाबा से मिली हुई शक्तियों को यूज करो। देह अभिमान बाबा से मिली हुई शक्तियों को यूज करने नहीं देता है।

साक्षी होकर देखा जाता है इतनी सेवा की वृद्धि कोई एक ने नहीं की है। कोई न कोई विशेषता वाला छिपा हुआ था, समय पर मैदान में आ गया। बाबा के अनेक बच्चे कोने-कोने में हैं, जो आ जायेंगे, स्थापना के कार्य में मददगार बन जायेंगे। हमको अपनी स्थिति सपूत बनाकर रखने में आनंद आता है। आनंदमय स्थिति हो और स्मृति का तिलक हो तो बाबा के दिलतख्तनशीन बन जायेंगे। बाबा का दिल सदा बेहद का है, बेफिक्र है, कभी कोई फिक्र नहीं है। गुप्त सपूत बनने वाले उनके समान बेफिक्र बन जाते हैं।

हम बाप के आज्ञाकारी बनेंगे तो दुआएं मिलेंगी। मनमत वाला कभी भगवान के दिल पर बैठ ही नहीं सकता। दूसरे की मत के प्रभाव वाला न कभी भगवान के दिल पर बैठ सकता, न ही मौज मना सकता है। मनमत पर चलना माना भगवान के द्वारा पाये हुए सुख से अपने को वंचित करना। दूसरे की मत के प्रभाव में आना माना गुलाम बनना। फिर भगवान से मागेंगे तो भी नहीं मिलेगा। बाबा ने संगमयुग पर बाप का, टीचर का, सतगुरु का पार्ट क्यों बजाया है, तीनों हमको इसलिए मिले हैं ताकि हम श्रेष्ठ बन जायें, एकदम बेफिक्र बादशाह।

दातापन के संस्कार इमर्ज करो

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा हम बच्चों को कहते हैं बच्चे तुम दाता बनो। एवं तो हमारा बाबा दाता है, उसके बच्चे हम मास्टर दाता हैं, बाबा ने जो दिया है वह औरों को देने के लिए हम निमित्त हैं इसलिए हम मास्टर दाता हैं। दूसरा- देवता बनने वाले हैं तो देवता का भी अर्थ है दाता। दातापन के संस्कार भरे होने के कारण ही हम देवता कहलाते हैं। देवता कहा ही जाता है देने वाले को। तीसरा - जब हम ब्राह्मण सो फरिश्ता हैं, तो फरिश्ता कुछ लेता नहीं, देने के लिए ही आता है। अच्छी चीज देने आयेगा, मैसेज देने आयेगा या प्राब्लम मिटाने के लिए आयेगा। तो फरिश्ता जीवन जो हमारी है वह भी देने की है, लेने की नहीं है और चौथा - इस समय हम सेवा की स्टेज पर हैं, बाबा ने हमें जो गुण, ज्ञान, शक्तियां खजाने के रूप में दी हैं उनके भी हम मास्टर दाता हैं। सेवाधारी का अर्थ ही है देने वाला न कि लेने वाला। बाबा का भी पहला टाइटल है वर्ल्ड सर्वेन्ट। बाबा हमें भी कहता टीचर माना सेवाधारी। तो सेवाधारी माना सेवा करने वाले। सेवा करना माना अपने द्वारा दूसरों को कुछ देना। चाहे मंसा से दो चाहे कर्मणा से... लेकिन जब सेवाधारी कुछ देता है तब ही वह सेवाधारी कहलाता है। तो इस रीति से भी हम दाता हैं। हमारी संगमयुग की यह जीवन ही दातापन की है। दाता माना देने वाला।

कई स्थानों पर हमसे चाहना रखते हैं कि इनसे कुछ प्राप्त हो, उस स्थान पर देना कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन कई बार ऐसी परिस्थिति आती है जो चाहना भी नहीं रखते और ही क्रिटिशाइज करते हैं, उस समय भी ऐसे व्यक्ति के प्रति आप दाता बनकर देते जाओ इसको कहेंगे दाता की सूक्ष्म स्टेज। हम लोगों को जो ज्ञान मिला है, वह देने के बिना तो रह नहीं सकते। हमारे सामने कोई भी आयेगा तो हमारे मुख से ज्ञान अवश्य निकलेगा। क्योंकि हम ज्ञान स्वरूप हो गये हैं। बाबा से हमें बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ है। दूसरी रीति से भी हमारा कोई सहयोग चाहता है तो हम दाता के बच्चे हैं, सहयोग देते हैं। लेकिन दाता की वास्तविक स्टेज यह है जो हमें कोई ठुकराये और मैं फिर भी दाता की स्टेज से देती रहूँ। जैसे साकार में बाबा को देखा। बाबा से कोई सहयोग की इच्छा रखे, महिमा करे, उनको तो दिया ही लेकिन बाबा ने कमजोर को भी अपनी शुभ भावना, शुभ कामना से हिम्मत दिलाकर बल दिया। कैसा भी बच्चा हो, भल ग्लानी करने वाला हो, उसके प्रति भी बाबा सदा दाता रहे। बाबा ने दातापन की स्टेज से उन्हें और भी एक्स्ट्रा दिया। अपनी स्टेज से उसको खड़ा कर दिया। इतना सहयोग दिया जो उसमें भल हिम्मत नहीं थी लेकिन अपने सहयोग से उसे खड़ा कर दिया। तो सूक्ष्म दातापन के संस्कार हमारे अंदर ऐसे हों जो ऐसी परिस्थिति में भी हम दाता बनकर देते रहें। कैसे भी संस्कार वाला हो, कैसी भी वृत्ति से हमारे सम्पर्क में आता हो लेकिन मैं उसके प्रति हमेशा देने की भावना रखूं, लेने की नहीं। जैसे हमें कोई रिगार्ड देता है तो हम उसको रिगार्ड देते। लेकिन रिगार्ड लेकर रिगार्ड देना यह कोई दातापन की स्टेज नहीं है। यह तो लेन-देन का हिसाब हो गया। उसने दिया, आपने लिया। लेकिन दातापन की स्टेज वह है जो वह हमें भले न दे लेकिन हमारी भावना उसके प्रति सदा दातापन की हो। तो जितना हम देते जायेंगे उतना नेचुरल हमें रिटर्न मिलेगा। कई बार ऐसे कहते हैं - हमने तो दाता बनकर बहुत शुभ भावना, शुभ कामना इसको दी लेकिन यह तो स्वीकार ही नहीं करता है। मैंने तो बहुत दिया उसको पहुंचता ही नहीं है। लेकिन दातापन की स्टेज है कि वह देखेगा नहीं कि मुझे रेसपांड मिला, वह देता जायेगा। जो स्वयं भरपूर है, उसने दिया तो क्या बड़ी बात है, वह गिनती क्यों करे। अगर मैं भरपूर हूँ, मास्टर दाता हूँ तो देती जाऊं, जितना देती जाऊंगी उतना देने से बढ़ता है कम नहीं होता। यह गुण यह शक्तियां जितना हम देते हैं उतना हमारे अंदर बढ़ते हैं। मंसा से हम शुभ भावना, शुभ कामना देते रहेंगे तो मंसा का प्रभाव नेचुरल पड़ते-पड़ते उसका स्थूल व्यवहार ठीक हो जायेगा। उससे वह आपेही मददगार बनते हैं।